SPINOZA - PANTHEISM

स्पिनोजा - सर्वेश्वरवाद

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons. Students)

स्पिनोजा के दर्शन में ईश्वर की अवधारणा को बहुत प्रभावशाली ढंग से व्याख्या की गई है उन्होंने ईश्वर का एक अनोखा रूप प्रदान किया है और इसे द्रव्य (Substance) कहा है साथ ही साथ इसे असीम कह कर निरपेक्षता प्रदान की है । ईश्वर के स्वरूप की व्याख्या करते हुए स्पिनोजा ने कहा है कि ,"ईश्वर द्रव्य है जो अनंत गुणों से विभूषित है एवं जिसका हर गुण ईश्वरीय नित्यता एवं असीमता को व्यक्त करता है" (God is absolutely infinite in other words God is Substance, it follows that there is one God and he is necessarily infinite)। डेकार्ट की तरह स्पिनोजा का ईश्वर विश्व से परे ना रहकर विश्व में ही है(He is immanent or basic element of the Universe)। ईश्वर विश्व में है और विश्व ईश्वर में है अतः दोनों में तादात्म्य है ।ईश्वर में सभी वस्तुओं का सार है।

सृष्टि ईश्वर का परिणाम रूप है। ईश्वर शरीर धारी नहीं है क्योंकि वाह अनंत है ,समस्त शरीर धारी को ईश्वर ने उत्पन्न किया है जबकि उसका कोई जन्मदाता नहीं है। ईश्वर परम स्वतंत्र है क्योंकि वह सृष्टि का परम कारण है। सृष्टि ईश्वर की स्वभाविक अनिवार्यता है कोई उनको सृष्टि के अभिव्यक्ति के लिए बाध्य नहीं करता तथा न ही उनको कोई इच्छा होती है क्योंकि वह आप्तकाम है।स्पिनोजा ने ईश्वर को विश्व का आधार कारण माना है जिसे इन्होंने तीन कारणों के द्वारा व्यक्त किया है : -

1ईश्वर अनिवार्य रूप से प्रथम कारण।
2 ईश्वर स्वतः कारण है वस्तुतः संयोगी नहीं है।
3 ईश्वर उन सब वस्तुओं का निमित्त कारण है जो अनन्त बुद्धि से जानी जाती है।

ईश्वर के सारे कार्य उसके अपने नियम के अनुसार हैं । विश्व की सभी घटना ईश्वर के द्वारा घटती हैं और यह नियम किसी प्रकार के परिवर्तन का विषय नहीं है ।कोई ऐसी सत्ता नहीं है जो ईश्वर के कार्य को प्रभावित कर सके ।अतः यह कहा जा सकता है कि स्पिनोजा के दर्शन में ईश्वर और प्रकृति का तादातम्य संबंध है। प्राकृतिक नियम को यहां ईश्वरीय नियम कहा गया है। विश्व में जितने कार्य होते हैं वह ईश्वर की पूर्णता का प्रतिफल है।

स्पिनोजा ने ईश्वर को अंतरभूत कारण माना है प्रकृति की सभी वस्तुओं की सत्ता

ईश्वर में है और वह सिर्फ ईश्वर के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है इसलिए कहा गया है कि Nothing has its existence apart from God and therefore God is the essence of entire Universe ।स्पिनोजा ने ईश्वर और उसके गुणों को नित्य कहा है साथ ही साथ विश्व के वस्तुओं का अंतर्भूत कारण भी मानता है।

ईश्वर की प्रकृति या रूप का निर्धारण करना असंभव है कारण ईश्वर से अलग किसी चीज की सत्ता संभव नहीं है ।

स्पिनोजा के दर्शन को अनीश्वरवादी दर्शन कहा गया है। उनके ईश्वर का जो विचार है वह सामान्य धार्मिक ईश्वर विचार से मेल नहीं खाते। स्पिनोजा , परंपरावादी विचारों में भौतिक और अध्यात्मिक विचारों के बीच की खाई को परिकल्पित करता है और वह सर्वेश्वरवाद का सिद्धांत देता है ।स्पिनोजा का विश्वास है कि, Every element in the world to be part of the God.

प्रश्न उठता है कि स्पिनोजा के 'ईश्वर का बौद्धिक प्रेम'(Intellectual Love of God) का क्या अर्थ है ?

स्पिनोजा ने कहा है कि तीसरे प्रकार के ज्ञान के द्वारा अवश्यमेव ईश्वर का बौद्धिक प्रेम उदित होता है चुकी इस तरह के ज्ञान से इस विचार से युक्त प्रसन्नता उदित होती है की ईश्वर का कारण है , ईश्वर का प्रेम इस अंश में नहीं कि हम उसे विद्यमान ख्याल करते हैं बल्कि इस अंश में है कि हम ईश्वर को नित्य जानते हैं ईश्वर के बौद्धिक प्रेम से मेरा यह तात्पर्य है। पुनः स्पिनोजा बताते हैं कि ईश्वर का बौद्धिक प्रेम जो तीसरे प्रकार के ज्ञान से पैदा होता है नित्य है इस तरह ईश्वर का बौद्धिक प्रेम भी नित्य है तात्पर्य उसका कोई प्रारंभ नहीं है वह पूर्ण प्रेम है उसमें मन की पूर्णता है ।इससे यह परिणाम निकलता है कि बौद्धिक प्रेम के अलावा कोई भी नित्य नहीं ।ईश्वर स्वयं को अनंत बौद्धिक प्रेम से प्रेम करता है। अनंत ईश्वर की अनंत प्रकृतिअनन्त पूर्णता का आनंद लेती है ।

ईश्वर के लिए मन का बौद्धिक प्रेम ईश्वर का वह प्रेम ही है जिससे ईश्वर स्वयं को प्रेम करता है अनंत होने की दशा में नहीं बल्कि जिस अंश में वह मन के सार के माध्यम से प्रकाशित हो सकता है ।जब नित्यता के दृष्टिकोण से इसका चिंतन किया जाए दूसरे शब्दों में ईश्वर के प्रति मन का बौद्धिक प्रेम उस अनंत प्रेम का भाग है जिससे ईश्वर के बौद्धिक प्रेम में मनुष्य का मन ईश्वरीय बन जाता है तथा बौद्धिक प्रेम ईश्वरीय प्रेम बन जाता है। अतः ईश्वर से बौद्धिक प्रेम करने में प्राणी ईश्वर के अपने प्रति प्रेम में भाग लेता है। स्पिनोजा कहते हैं कि इसे यह निष्कर्ष निकलता है कि ईश्वर जहां तक अपने आप से प्यार करता है मनुष्यों से प्रेम करता है तथा इसके परिणाम स्वरूप मनुष्यों के प्रति ईश्वर का प्रेम तथा ईश्वर के प्रति मनुष्य का बौद्धिक

प्रेम एक ही वस्तु है। पुनः स्पिनोजा यह बताते हैं कि प्राणी के मोक्ष आप आप्तकामता तथा स्वाधीनता का अभिप्राय ईश्वर के प्रति स्थिर तथा नित्य प्रेम है ।धर्म पुस्तकों में इस प्रेम की महिमा का वर्णन किया गया है ।इससे मनुष्यों को वास्तविक संतोष मिलता है। प्राणी के मन का सार ज्ञान में है जिसका मूल तथा आधार ईश्वर है। ईश्वर की प्रकृति द्वारा ही मन की प्रकृति बनती है सृष्टि में ऐसी कोई वस्तु नहीं जो इस बौद्धिक प्रेम के प्रतिकूल है अथवा इसे दूर कर सकती है। ईश्वर के प्रति बौद्धिक प्रेम मन की प्रकृति का अनिवार्य निष्कर्ष है। मन ईश्वर की प्रकृति से प्रकट एक नित्य सत्य है बौद्धिक प्रेम उसकी स्वाभाविक अभिव्यक्ति है ।अतः इस प्रेम के विपरीत कोई भी वस्तु सच के विपरीत है तथा मिथ्या है तात्पर्य है कि ऐसी कोई वस्तु नहीं है।